International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 390-391

गिरिराज किशोर के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष

डॉ० कृष्णा देवी
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

स्वातन्त्र्योतर काल में भारत में औद्योगिक विकास के साथ पूँजीवाद का उदय हुआ। देश की अर्थव्यवस्था ने जनता को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया है। आधुनिक समाज में वर्ग भेद की भावना ने ही वर्ग संघर्ष को जन्म दिया। वर्ग चेतना ही सामाजिक परिवर्तन का सशस्त्र यन्त्र है जिससे सर्वहारा वर्ग भी शोषण के विरूद्ध शंखनाद कर सकता है।

वर्ग की परिभाषा देते हुए मेकाइवर एण्ड पेज ने कहा – ''वर्ग समुदाय का वह भाग है जो अपनी सामाजिक परिस्थिति के कारण दूसरे भागों से अलग दिखाई देता है।''[1]

समाज को आर्थिक आधार पर मुख्यतः चार भागों में बाँटा जाता है। उच्च वर्ग, उच्च–मध्यम वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। समाज में इन चारों वर्गों में वर्गभेद चलता रहता है। जिसका मुख्य आधार पेशा न होकर परिस्थिति (स्टेटस) है। वर्ग संघर्ष सभी देशों में उत्पन्न होता है। इसलिए भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में अपनी–अपनी रीति से वर्ग संघर्ष होता रहता है। जिस क्षेत्र में अधिकार हनन होता है, उस क्षेत्र का वर्ग तिलमिला उठता है। वर्ग शोषक–शोषित, अमीर–गरीब, उच्च निम्न, धार्मिक–अधार्मिक आदि दल में विभक्त हो जाता है। ज्यादातर ग्राम–जीवन में भी आजकल वर्ग संघर्ष जोर पकड रहा है। समाजवादी चेतना के कारण इसका फैलाव अधिक हुआ है। गिरिराज किशोर ने समाज में व्याप्त इस वर्ग संघर्ष को अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

उनके सामन्तवादी उपन्यासों में वर्ग संघर्ष की स्थिति अधिक उजागर हुई है। जमींदार वर्ग मुख्यतः ब्रिटिश सरकार की उपज था। यह वर्ग विलासी और रूढ़िवादी था। जमींदार वर्ग अंग्रेजों का सहयोगी और किसान–खेतिहर मजदूर वर्ग का शोषक है। इसी जमींदार वर्ग में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन ने अंग्रेजों का साथ दिया था और आजादी के बाद अब भारतीय पूंजीपति वर्ग के साथ हाथ मिलाकर राजसत्ता का सुख भोग रहा है। जमींदार वर्ग ऐसा निठल्ला और निकम्मा वर्ग है जो स्वयं कुछ नहीं करता।

'ढाई घर' उपन्यास में बड़े राय का बेटा इस बात का सटीक उदाहरण है। कृष्णराय का अत्याचार निर्मम है। स्वतन्त्रता के बाद जगन मामा के बहाने मंत्रियों का सामन्ती रूप देखकर तथा स्वार्थी प्रवृत्तियों में लीन देखकर उसके भीतर विद्रोह फूट पड़ता है। भास्कर राय को भी लगता है कि बड़े राय सामन्त थे, जबकि जगन आजादी के दीवाने। कृष्णराय ने मिरची चमार के परिवार के खिलाफ रपट दर्ज कराई थी। उसके दोनों लड़कों ने न्याय के लिए बड़ा संघर्ष किया था। रामदीन महाराज के बेटे को भास्कर राय ने चाकू भोंक दिया था। तब भी पंडित समाज ने अपने अधिकार बोध को लेकर संघर्ष किया था। कांग्रेस की 'करो या मरो' की ललकार थी। जिसमें जगन आचार्य के साथ कई लोगों ने कूच किया था। भगतसिंह के इस विधान को देखें – ''किस का दिन, किस की रात, अब तो एक ही लौ लगी है। हिन्दुस्तान के लिए आजादी और पेटों के लिए रोटी। आप लोग आजादी को पुरातत्व विज्ञानियों की तरह धीरे–धीरे उकेर रहे हैं। हम चाहते हैं, इधर चाक करें और उधर आजादी का अण्डा बाहर आ जाए। मुल्क उनके पास हो जिनका है। रोटी उनके घर में हो जो उसे कमाते हैं।''[2]

'जुगलबंदी' उपन्यास में भी 'ढाई घर' की तरह देशवासी का ब्रिटिश सरकार से विद्रोह है। आजादी के बाद जमींदारों के अत्याचार और भी सुनिश्चित ढ़ंग से बढ़ गये थे, तो दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में किसान भी इनके अत्याचारों और शोषण से मुक्ति के लिए संगठित होने लगे। उनमें नयी सामाजिक चेतना का उदय हुआ और वे अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हो गये। 'जुगलबंदी' में कांग्रेसियों का संघर्ष अंग्रेजों के खिलाफ है। अंग्रेजों की जीहूजूरी करने वाले शिवचरण बाबू ने वार–फण्ड में जेवर देकर ब्रिटिश सरकार की मदद की। कांग्रेस दल इस बात को लेकर क्रोधित था। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू के नाम ले–लेकर नारे लगाता था। जब शिवचरण बाबू के भाई शिवनाथ बाबू गाड़ी लेकर जा रहे थे, तब उन्हें देखकर कांग्रेस का दल चिल्लाया – ''अंग्रेजों का पिट्ठू हाय–हाय! ...शिवचरण बाबू हाय–हाय! वार फण्ड में जेवर देने वालों हाय–हाय! अंग्रेजों भारत छोड़ो। अंग्रेज बच्चा हाय–हाय!''[3] फिर चाहे पुलिस कप्तान गोली चलाने का आदेश दें, वे डरने वाले नहीं थे। उनका तो सिर्फ एक ही सिद्धान्त था कि मारोगे तो मर जाएंगे। लेकिन घर वापस नहीं जाएंगे।

कुंवर साहब के जिगरी दोस्त अमीर सिंह का पुत्र चतरसिंह विद्रोह पर उतर आता है। वह पैसा देने से इन्कार कर देता है, उसे भी कांग्रेसी करार दिया जाता है और जेल में बंद कर दिया जाता है। महात्मा गांधी जी का भारत छोड़ो आन्दोलन, सत्याग्रह और जेल भरो अभियान सक्रिय होता है। सुमत बाबू, शफिक, डॉ० चरण, सावित्री देवी, भगत नारायण सिंह आदि को गिरफ्तार किया जाता है। पूरे शहर में यह खबर फैलती है कि शिवचरण बाबू ने अंग्रेज सरकार की सेवा की है। इस बात को लेकर कांग्रेसियों का संघर्ष बढ़ जाता है। उनमें चतरसिंह का विद्रोह सराहनीय है। चतरसिंह के माध्यम से अंग्रेजों एवं सुराजियों का सामाजिक–राजनीतिक विद्रोह दिखाई देता है – ''मेरी लड़ाई तो इस सरकार से है। मैं जानता हूँ मैं कभी कांग्रेस में नहीं खप सकता। ये अंदर एक–दूसरे से लड़ते हैं। जल और रोटी पर लड़ते हैं। एक–दूसरे के खिलाफ अपनी ताकत की आजमायश करते हैं। आगे चलकर भी आपस में ही एक–दूसरे के खिलाफ भूख हड़ताल करेंगे। लेकिन इस सरकार से लड़ने का मेरे पास कोई तरीका नहीं।''[4]

गिरिराज किशोर ने 'जुगलबंदी' की भूमिका में लिखा है – ''सन् 1940 ई० की पृष्ठभूमि पर जहाँ पूरा विश्व युद्ध की आग की लपेट में था वहीं भारत अपनी आजादी की लड़ाई के दौर से गुजर रहा था। तत्कालीन अंग्रेज जमींदार वर्ग के स्वार्थपन, दमन नीति और

मोह भंग के साथ–साथ परस्पर विरोधी पीढ़ियों के संघर्ष और उसके सह–अस्तित्व का सफल चित्रिण इस उपन्यास की कथ्य चेतना की उपलब्धि में कहा जा सकता है।''[5]

'प्रस्तावित' और 'परिशिष्ट' दोनों ही उपन्यासों में दलित व साहब नौकरी करने वाले लोग उससे बुरा व्यवहार करते है। अछूत को लेकर बार–बार कोसते है। बालेसर के विरूद्ध शिकायत जो फाईल में मिलती है। उसमें स्पष्ट था। ''श्री त्रिपाठी कनिष्ठ अधीक्षक ने जब बालेसर से फोन उठाकर उनकी मेज पर रखने के लिए कहा तो बालेसर ने हुक्म उदूली की ओर अपमानजनक अन्दाज में कहा कि अपने आप उठा लीजिए। जब आप हमारा छुआ गिलास नहीं छू कते तो फोन कैसे छू लेंगे।''[6]

आजादी के बाद अनुसूचित जाति एवं जन–जातियों के लिए शिक्ष संस्थाओं में प्रवेश एवं नौकरियों में पदोन्नति के अवसर सुरक्षित किये। संसद और विधान सभाओं में उनके प्रतिनिधित्व की पर्याप्त और व्यापक व्यवस्था संविधान के माध्यम से निश्चित कर दी। इस स्थिति ने अर्थात् आरक्षण की सुविधा ने सदियों से अपना आधिपत्य जमाये रखने वाले सवर्णों को मानसिक रूप से आहत किया और ऐसी जाति के खिलाफ क्रोध एवं घृणा की स्थिति उत्पन्न हुई। अधिकार मिलने के कारण आर्थिक रूप से निम्न वर्ग में चेतना उत्पन्न हुई और उनकी इसी चेतनना को उच्च वर्ग द्वारा दबाने की कोशिश की गई। फलस्वरूप दोनों वर्गों में संघर्ष बढ़ता गया। 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुकूलराम, रामउजागर आदि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं और उच्च वर्ग द्वारा प्रताड़ित होते रहते हैं। परंतु संघर्ष करना नहीं छोड़ते।

'पहला गिरमिटिया' एक वृहद उपन्यास है। जिसमें समग्र कथा संघर्ष कथा ही है। उपन्यास का प्रत्येक पृष्ठ वर्ग–संघर्ष को लेकर भरा पड़ा है। कुली, व्यवसायियों एवं अन्य भारतीय जो दक्षिण अफ्रीका में पीड़ित हैं। वे अपने अधिकार के लिए जाग्रत होते हैं। भारतीयों के अधिकारों की लड़ाई इंडियन फ्रेंचाइज की सभा में बदल जाती है। गोरों के खिलाफ गिरमिटियों का संघर्ष बड़े पैमाने पर फैलता है। जैसे – ''आप माने या न मानें, लेकिन आगे चलकर इस पूरे संघर्ष के कवच यही लोग होंगे जिन्हें आज हम गिरमिटिया का नाम देकर अपने से काटकर अलग कर देना चाहते हैं। आपका अपना महत्व है... इनका सबके लिए महत्व है। कोई भी परिवर्तन इनके बिना संभव नहीं। ये जल–प्लावन भी कर सकते हैं और जल–प्लावन के समय टीला बनकर खड़े भी हो सकते हैं।''[7]

इस प्रकार अपने अधिकार के लिए ही सन् 1894 में नेपाल नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई थी। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के कारण भारतीयों के अस्तित्व का सवाल था। उस उपनिवेश को मेहनत के बल पर समृद्ध करने वाली जनता को सभी अधिकारों से वंचित रखना गोरों की कूटनीति थी। वहाँ बस एक ही सिद्धान्त वाक्य था कि गोरे सब गड़रिये हैं, बाकी सब भेड़े है।

रंगभेद के कारण छुआछूत, बिना किसी कारण गिरमिट से निकाल देना, क्रूर शोषण, मताधिकार से वंचित रखना आदि अनेक कारणों के फलस्वरूप एक बड़ा वर्ग खड़ा हुआ जो अपने अधिकार के लिए लड़ाई की जंग में कूद पड़ा। इस वर्ग में स्त्रियाँ भी थी। मोहनदास गांधी के नेतृत्व में इस वर्ग ने अहिंसात्मक संघर्ष शुरू किया।

दक्षिण भारत में रह रहे गिरमिटियों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा ताकि वे एक खुशहाल जीवन जी सकें। अंग्रेज गिरमिटियों को ये अधिकार देना नहीं चाहते थे। इसलिए दोनों वर्गों में संघर्ष होना स्वाभाविक था।

इस प्रकार गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यासों में वर्ग संघर्ष को यथार्थ अभिव्यक्ति दी। यह वर्ग संघर्ष समाज में हमेशा चलता रहा है और तब तक चलता रहेगा जब तक सभी वर्गों को समान अधिकार न मिलें। समान अधिकार मिलने के बाद ही स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।

सन्दर्भ

1. मैकाइवर एण्ड पेज, सोसाइटी, पृ० 348
2. गिरिराज किशोर, ढाई घर, पृ० 204–205
3. वही, जुगलबंदी, पृ० 105
4. वही, पृ० 185
5. वही, पृ० 09
6. वही, यथाप्रस्तावित, पृ० 63
7. वही, पहला गिरमिटिया, पृ० 251